शकुन्तला का चरित्र-चित्रण (Contd)

Uma Pathak
Deptt. of Skt.
B.A. IInd yr. (Contnt)

Contd.
③ शकुन्तला की अनन्यप्रतिनिष्ठा का ही प्रभाव है कि सातवें अंक में शापमुक्ति के पश्चात् दुष्यन्त शकुन्तला को प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो उठा। वह दुष्यन्त को दोषी न मानकर, अपने भाग्य को ही दोष देती है।

④ कला-चातुर्य - शकुन्तला गृहकार्यों में दक्ष है। वृक्षों को सींचना, पशु-पक्षियों से स्नेह करना एवं अतिथि-सत्कार आदि कलाओं में वह निपुण है। उसी पर आश्रम-भार देकर कण्व तीर्थयात्रा को गए थे। वह विदुषी तथा काव्य-रचना चतुर है। वह अपनी विरह वेदना को आर्याछन्द में लिखकर दुष्यन्त के पास भेजती है -

'तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवापि रात्रावपि।
निर्घृण! तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथान्यङ्गानि॥'
(अभि० शाकु० - 3/19)

⑤ प्रकृति प्रिया शकुन्तला - शकुन्तला का पालन-पोषण जिस प्राकृतिक वातावरण में हुआ, उससे उनके प्रति स्नेह होना अत्यन्त स्वाभाविक है। आश्रमों के वृक्षों के किसलयों को भी नहीं तोड़ती है, यद्यपि फूलों के आभूषण धारण करना उसे अत्यन्त प्रिय है। उनके साथ सहोदरों के समान स्नेह है इसकारण लता तथा वृक्षों में पहली बार फूल खिलने पर वह उत्सव मनाती है, उनकी आज्ञा लिए बिना वह फूलों को तोड़ना नहीं चाहती - 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या

७ नमो अरिहन्ताणं ह्रीं नमः।

नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
(वः)
सेयं शकुन्तला याति पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥
(अभि० शाकु० -4।11)

⑥ निष्कपट वृत्ति - जब शकुन्तला महर्षि कण्व के आश्रम से विदा होकर दुष्यन्त के दरबार में जाती है, किन्तु उसकी अँगूठी शक्रावतार पर शचीतीर्थ में गिर गई है। राजा का यह उपालम्भ कि स्त्री - चरित्र झूठे प्रसंगों को प्रस्तुत करता है। गौतमी तब कहती है - 'तपोवन में पाली गई इस शकुन्तला को छल क्या चीज है, यह बिल्कुल ही नहीं मालूम।'

⑦ प्रणय का स्वाभाविक विकास - 'शकुन्तला निसर्ग कन्या' है। उसमें प्राकृतिक प्रणय - शक्ति का स्वाभाविक विकास होता है। कवि प्रथम अंक में ही दुष्यन्त और शकुन्तला के परस्पर आकर्षण का वर्णन करते हैं। राजा शकुन्तला के रूप - सौंदर्य की प्रशंसा कर उसके प्रति अपना आकर्षण व्यक्त करता है।

⑧ अन्तर्मन की सहजता - दुष्यन्त के प्रथम दर्शन ने शकुन्तला को भी आकर्षित किया है, जिसे वह व्यक्त नहीं करती और उसका वर्णन कालिदास बड़ी सहजता से करते हैं -
दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा। आसीद्विवृत्तवदना च विमोचयन्ती शाखासु वल्कलमसक्तमपि द्रुमाणाम्॥' (अभि० शाकु० 2।12)

Contd.